21 / 05 / 77 की अव्यक्त वाणी

पर आधारित योग अनुभूति

संगमयुगी ब्राह्मण जीवन का विशेष गुण और कर्त्तव्य का अनुभव

➢➢ संगमयुगी ब्राह्मण जीवन

➳ _ ➳ मैं संगमयुगी सर्वश्रेष्ठ ब्राह्मण आत्मा हूं

→ अपने भाग्य पर नाज करती मंद मंद मुस्कराती एक टक बाबा को निहार रही हूं

→ वाह मेरा मीठा प्यारा बाबा वाह !! वाह मेरा भाग्य वाह !!

■ दुनिया में कितनी हलचल है परेशानियां है चिन्तायें है समस्याओं ही समस्याओ से घिरी है मनुष्यात्मायें और उस झूठे जगत मे ढूंढ रही है अल्पकाल के सुख को

■ मैं आत्मा इन सब चिंताओं परेशानियों से मुक्त बेफिकर बादशाह अपने नये अलौकिक जीवन की रुहानी मस्ती मे मस्त बैठी हूं बाबा के सम्मुख

→ पुरुषोत्तम संगमयुग में ही स्वयं भगवान आकर सुप्रीम टीचर बन पढा रहे है

→ मैं आत्मा गाडली स्टूडेंट हूं

→ ज्ञानसागर बाबा से मिले ज्ञान से ही मुझ आत्मा ने स्वयं को व अपने परमपिता परम शिक्षक परम सदगुरू को पहचाना है

→ स्वयं बापदादा मेरा ज्ञान रत्नों से श्रृंगार कर रहे है

→ मुझ आत्मा को आदि मध्य अंत का ज्ञान देकर नाॅलेजफुल बना रहे है

→ ज्ञान सागर से मिले ज्ञान रत्नों को धारण कर मैं आत्मा मास्टर ज्ञान सागर बन रही हूं

→ मैं आत्मा अपने अलौकिक जीवन के कर्तव्य को विशेष स्मृति मे रखती हूं

■ मुझ आत्मा को ये नया अलौकिक जीवन ब्राह्मण जीवन मिला ही है विश्व-कल्याण के लिए

➳ _ ➳ मैं आत्मा वर्ल्ड सर्वेंट हूं

→ मैं आत्मा बेशुमार कीमती अविनाशी ज्ञान धन का दान कर रही हूं

→ आप समान सबको भिखारी से अधिकारी बना रही हूं

→ परमात्म शक्तियों की अधिकारी आत्मा बन जो सुख शांति का अनुभव मुझ आत्मा ने किया वो अनुभव दूसरी आत्माओ को करा रही हूं

■ विश्व परिवर्तन के कार्य मे अपने को निमित समझ रुहानी सेवा करती प्रयत्क्ष फल खुशी का अनुभव कर रही हूं

➳ _ ➳ अपनी चेकिंग करती हूं कि मैं ब्राह्मण जीवन का विशेष कर्त्तव्य निभा रही हूं

→ क्या मैं एक बाप से ही प्रीत की रीति निभा रही हूं ??

→ मुझ आत्मा का किसी देहधारी से कोई लगाव झुकाव नही... आकर्षण नही

→ सर्व सम्बंध बस एक बाबा से है

- मेरा तो एक शिव बाबा दूसरा न कोई

➳ _ ➳ मैं आत्मा विश्व सेवाधारी हूं

→ मैं आत्मा हर सेकेंड सेवा मे लगाकर अविनाशी कमाई कर रही हूं

- अपने चाल चलन से सेवा कर बाबा को प्रयत्क्ष करने का पुरुषार्थ कर रही हूं

→ मुझ आत्मा की सुख, शांति, खुशी की वायब्रेशनस से दूसरी आत्माओं को भी सुख, शांति, खुशी का अनुभव करा रही हूं

→ मैं आत्मा अपनी वृति द्वारा चहुं ओर पवित्रता की किरणें फैलाती वायुमंडल को पावन बना रही हूं

→ बापदादा के साथ कम्बाइंड रह मैं आत्मा स्मृति, वृति, दृष्टि और कृति द्वारा निमित बन सेवा कर रही हूं

→ अपने श्रेष्ठ भाग्य और श्रेष्ठ जीवन की स्मृति मे रहते वाह के गीत गाती अपना पार्ट बजाती हर्षित रह सन्तुष्टता का अनुभव कर रही हूं